INTERNATIONAL RESEARCH JOURNAL OF HUMANITIES AND INTERDISCIPLINARY STUDIES
( Peer-reviewed, Refereed, Indexed & Open Access Journal )
DOI : 03.2021-11278686 ISSN : 2582-8568 IMPACT FACTOR : 8.031 (SJIF 2025)

# उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की लैंगिक समानता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

## (A Study of the Attitude of Higher Secondary Teachers towards Gender Equality)

**हेमवीर सिंह**
शोधार्थी,
धर्म समाज महाविद्यालय,
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश, भारत)

**डॉ. मृदुला सिंह**
एसोसिएट प्रोफेसर, (रि.)
शिक्षक शिक्षा विभाग,
धर्म समाज महाविद्यालय,
अलीगढ़ (उत्तर प्रदेश, भारत)

**DOI No.** 03.2021-11278686 **DOI Link ::** https://doi-ds.org/doilink/06.2025-47891563/IRJHIS2506011

***सारांश:***

*समावेशी समाज के निर्माण में शिक्षा में लैंगिक समानता की महत्वपूर्ण भूमिका है। उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षक किशोर शिक्षार्थियों को उनके विकास के निर्णायक चरण में प्रभावित करते हैं। यह अध्ययन उच्च माध्यमिक शिक्षकों के लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण और उनके व्यावसायिक व्यवहार में इसकी अभिव्यक्ति का पता लगाना चाहता है। मिश्रित-विधियों (mixed-methods) के उपयोग से शहरी व ग्रामीण विद्यालयों के 150 शिक्षकों से आँकड़े एकत्र किए गए। अध्ययन से पता चलता है कि अधिकांश शिक्षक सिद्धांततः लैंगिक समानता का समर्थन करते हैं परंतु कक्षा-कक्ष की गतिशीलता और विषय-वरीयताओं में अंतर्निहित पूर्वाग्रह बने हुए हैं। निष्कर्ष लक्षित संवेदीकरण एवं प्रशिक्षण कार्यक्रमों की आवश्यकता को रेखांकित करते हैं।*

***कीवर्ड:*** *लैंगिक समानता, शिक्षक अभिवृत्ति, माध्यमिक शिक्षा, समावेशी शिक्षा, लैंगिक पूर्वाग्रह*

## 1. परिचय :

मनुष्य उस समाज का दर्पण होता है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। एक समान विचारधारा वाले समाज में अधिकतर समान मूल्य होते हैं, हालाँकि, नागरिकों के हित और मूल्य बिल्कुल समान नहीं हो सकते, यह माना जा सकता है कि यह राज्य के लिए भी विनाशकारी होगा। लिंग और लैंगिक समानता के मुद्देहमेशा से रहे हैं और आज भी सामयिक मुद्दों में से एक हैं क्योंकि इनका देश के विकास और उसके भविष्य पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ता है।

लिंग संबंधी मुद्दों पर कई विषयों के संबंध में चर्चा की जा सकती है क्योंकि हम सार्वजनिक जीवन के सभी चरणों में सक्रिय रूप से उनका सामना करते हैं। दुर्भाग्य से, 'शिक्षा के सभी स्तरों तक अत्यधिक विस्तारित पहुँच, राजनीतिक भागीदारी की उच्च आकांक्षाओं और ज्ञान अर्थव्यवस्थाओं के विशाल विकास के युग में,लगभग एक चौथाई लड़कियों और महिलाओं को शिक्षा से वंचित किया जा रहा है। इसलिए, हम अभी भी एक ऐसी दुनिया में रह रहे हैं जहाँ शिक्षा की विशेषता व्यापक लैंगिक असमानताएँ हैं। और वे 'जिनकी शिक्षा तक पहुँच नहीं है वे लड़कियाँ और महिलाएँ हैं। पैंसठ

मिलियन लड़कियाँ कभी स्कूल भी नहीं जाती हैं, और अनुमानतः 100 मिलियन प्राथमिक शिक्षा पूरी नहीं कर पाती हैं, अक्सर इसलिए क्योंकि इसकी गुणवत्ता खराब होती है और उनके अवसर लड़कों के बराबर नहीं होते हैं'। 'स्कूल लैंगिक समाजीकरण के लिए प्रमुख संदर्भ हैं आंशिक रूप से इसलिए क्योंकि बच्चे ऐसे परिवेश में साथियों के साथ बहुत समय बिताते हैं। लगभग सभी मनोवैज्ञानिक लक्षणों के लिए जिन पर युवा लड़के और लड़कियाँ भिन्न होते हैं (जैसे, पढ़ने की क्षमता, खेलने की प्राथमिकताएँ), दोनों समूहों का वितरण ओवरलैपिंग है। स्कूल लैंगिक अंतर को बढ़ा या घटा सकते हैं ऐसा वातावरण प्रदान करके जो लैंगिक समानता और लैंगिक अंतर के बीच समानता को बढ़ावा देते हैं।

स्कूल संबंधों विशेष रूप से शिक्षक-छात्र संबंधों के लैंगिक पहलुओं पर बहुत सारे दिलचस्प शोध किए गए हैं। लैंगिक शिक्षा और विकास को एक नए विद्वत्तापूर्ण क्षेत्र के रूप में स्थापित करने के लिए सबसे महत्वपूर्ण उत्प्रेरकों में से एक लैंगिक शिक्षा नीति निर्माण में अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की बढ़ती भागीदारी है।"यह प्रवृत्ति 1990 के दशक में शुरू हुई और 2000 में संयुक्त राष्ट्र सहस्राब्दि विकास लक्ष्यों(एमडीजी) के प्रकाशन से काफी बढ़ गई। ऐसे लक्ष्य गरीबी में ठोस कमी के माध्यम से दुनिया भर में विकास सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर केंद्रित थे। उन्होंने शिक्षा के संबंध में लैंगिक समानत के बारे में बात करने की वैधता भी स्थापित की"।

प्रोफेसर एस क्लेन के अनुसार"स्कूल दो प्राथमिक स्रोतों के माध्यम से लिंग भेदभाव को प्रभावित करते हैं: शिक्षक और सहकर्मी, क्योंकि वे लड़कों और लड़कियों को अलग-अलग सीखने के अवसर और प्रतिक्रिया प्रदान करके सीधे लिंग भेदभाव को प्रभावित करते हैं। शिक्षक और सहकर्मी भी लिंग के बारे में सीखने के स्रोत हैं। शिक्षक पठ्य सामग्री प्रस्तुत करते हैं जिसमें लिंग संबंधी रूढिबद्ध व्यवहार होता हैऔर सहकर्मी लिंग संबंधी रूढ़िबद्ध दृष्टिकोण और व्यवहार प्रदर्शित करते हैं। बच्चे लैंगिक रूढ़िबद्धता और पूर्वाग्रहों को आत्मसात कर लेते हैं जो बदले में उनकी प्राथमिकताओं और व्यवहार को निर्देशित करते हैं"।

शिक्षा में लिंग अनुसंधान के अग्रदूत और नेता मीरा और डेविड सैडकर बताते हैं कि भले ही वे एक ही कक्षा में बैठते हों और एक ही शिक्षक की बात सुनते हों, लेकिन लड़के और लड़कियों को पूरी तरह से अलग शिक्षा मिलती है। यह इस तथ्य से प्रमाणित होता है कि लड़कियाँ स्कूल में प्रवेश करने के समय लड़कों से बेहतर या हर समय उतनी ही सफल होती हैं, लेकिन जब वे स्कूल से स्नातक होती हैं, तो लड़के उन्हें पीछे छोड़ देते हैं'। इसके अलावा, उनके प्रत्यक्ष अवलोकन अध्ययनों ने लिंग असमानता में निम्नलिखित प्रवृत्तियों का खुलासा किया- हाई स्कूल के शिक्षक लड़कियों की तुलना में लड़कों पर अधिक सक्रिय ध्यान देते हैं। वे उनसे अधिक बात करते हैं, अधिक प्रश्न पूछते हैं, उनकी अधिक सुनते हैं, उनसे अधिक बार सहमत होते हैं, अधिक आलोचना करते हैं और अधिक प्रशंसा करते हैं। एन बेरेकाशविली ने अपने काम 'शिक्षा के संदर्भ में लिंग समाजीकरण कारकष् में शिक्षकों के लिंग दृष्टिकोण और व्यवहार रणनीतियों पर एक अध्ययन प्रस्तुत किया है जिसमें लिंग मुद्दों के प्रति शिक्षकों के दृष्टिकोण पर विभिन्न शोधकर्ताओं द्वारा लेखों का विश्लेषण शामिल है। वह स्वीकार करती है कि उच्च माध्यमिक स्कूल में लड़कियों के लिए कम अनुकूल माहौल का वर्णन करते हैं और सैंडलर और हॉल उन पर ध्यान न देने पर जोर देते हैं। जब समूह को लड़कों और लड़कियों में विभाजित किया जाता है(यदि वे अलग-अलग बैठते हैं) तो यह पता चलता है कि शिक्षक 'लड़कों के क्षेत्र' की ओर आकर्षित होते हैं और पूरी चर्चा वहीं केंद्रित होती है। हाई स्कूल स्तर पर, यह पता चला कि लड़के और लड़कियों को अलग-अलग ग्रेड के साथ फीडबैक मिलता है। लड़कों की अधिक बौद्धिक उपलब्धियों के लिए प्रशंसा की जाती है, जबकि लड़कियों की प्रशंसा किए गए कार्य की उपस्थिति के लिए की जाती है। लड़कियों की बौद्धिक कौशल के लिए अधिक आलोचना की जाती है, जबकि लड़कों की परिश्रम और सटीकता की कमी के लिए आलोचना की जाती है।

डेविड सैडकर के अनुसार जब एक शिक्षक ने किसी लड़के की बौद्धिक विफलता का आकलन किया, तो उसने इसे परिश्रम की कमी के लिए जिम्मेदार ठहराया। लड़कियों की विफलता के मामले में, परिश्रम के लिए कम अपील थी, इसलिए लड़कों का मानना था कि अधिक परिश्रम से वे सफल होंगे, जबकि लड़कियों को विफलता को अपनी अक्षमता के रूप में देखने के लिए मजबूर किया जाता है। महिलाओं और पुरुषों के मूल्यांकन में ऐसी प्रवृत्तियाँ अभी भी मैक्की और शेरिफ के क्लासिक कार्यों में पाई जाती हैं। गुड और रुप के शोध इन आंकड़ों की पुष्टि करते हैंविशेष रूप से, वे ध्यान देते हैं कि शिक्षक लड़कों को लड़कियों की तुलना में विचारों को फैलाने और उन्हें लागू करने का अधिक अवसर देते हैं।

सामाजिक शिक्षण सिद्धांत में बंडुरा कहते हैं कि लोग मॉडल का अवलोकन करके सीखते हैं यदि वे कई आवश्यकताओं को पूरा करते हैं। मॉडल व्यवहार सेक्स के लिए उपयुक्त है(उदाहरण के लिए, लड़कियां, उनके अनुमान में, अधिक स्त्रैण व्यवसायों के लिए आकर्षित होती हैं और मर्दाना व्यवसायों की ओर आकर्षित नहीं होती हैं, जैसे, इंजीनियर, सर्जन, आदि)। प्रोफेसर सुसान एस क्लेन के अनुसार, 'लिंग भेदभाव और सेक्स स्टीरियोटाइपिंग में कमी के द्वारा समाज में सेक्स इक्विटी लक्ष्यों की उपलब्धि व्यक्तिगत, राजनीतिक, आर्थिक और दार्शनिक कारणों की एक विस्तृत विविधता के लिए मूल्यवान है। सेक्स इक्विटी का समर्थन करने के लिए कुछ व्यक्तिगत और सामाजिक कारण मानव विकास क्षमता का अनुकूलन करना है ताकि सभी महिलाएं और पुरुष लिंगनिर्धारित भूमिकाओं की सीमाओं के बिना खुद को व्यक्तियों के रूप में विकसित कर सकें,।

**2. अध्ययन की आवश्यकता:**

लैंगिक समानता एक न्यायपूर्ण एवं प्रगतिशील समाज की आधारशिला है। उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा, विशेष रूप से, युवा मानस को समानता व समतामूलक मूल्यों को अपनाने हेतु प्रेरित करने में महत्वपूर्ण है। शिक्षक अपने व्यवहार भाषा और शिक्षाशास्त्र के माध्यम से लैंगिक मानदंडों को या तो मजबूत करते हैं या उन्हें चुनौती देते हैं।

शिक्षा में लैंगिक समानता हेतु शिक्षा का अधिकार अधिनियम और राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 जैसे कानूनी व नीतिगत उपायों के बावजूद, भारतीय विद्यालयों में लैंगिक पूर्वाग्रह चिंता का विषय बना हुआ है। यह शोध 15-18 वर्ष की आयु के छात्रों के साथ सीधे संवाद करने वाले उच्च माध्यमिक शिक्षकों के लैंगिक समानता के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन करता है।

3. **समस्या कथन:** उच्च माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की लैंगिक समानता के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

4. **अध्ययन के उद्देश्य :**

1. उच्च माध्यमिक शिक्षकों के लैंगिक समानता के प्रति सामान्य दृष्टिकोण की जाँच करना।
2. लिंग, पढ़ाए जाने वाले विषय और संस्थान के प्रकार (सरकारी/निजी) के आधार पर दृष्टिकोण में अंतर का विश्लेषण करना।
3. कक्षा-कक्ष में शिक्षकों द्वारा लैंगिक समानता संबंधी प्रथाओं के कार्यान्वयन की सीमा का पता लगाना।
4. शिक्षकों में लैंगिक संवेदनशीलता बढ़ाने हेतु सुझाव प्रदान करना।

5. **संबंधित साहित्य की समीक्षा:**

कई अध्ययनों ने लैंगिक रूढ़ियों को बनाए रखने या उन्हें चुनौती देने में शिक्षकों की भूमिका पर बल दिया है। सैडकर और ज़िटलमैन (2009) ने देखा कि कक्षाओं में लैंगिक पूर्वाग्रह से छात्रों, विशेषकर लड़कियों, का आत्म-सम्मान कम होता है। यूनेस्को (2018) के अनुसार, लैंगिक रूप से संवेदनशील शिक्षण से छात्रों की भागीदारी व सीखने के परिणामों में सुधार होता है।शर्मा (2017) ने पाया कि कई भारतीय शिक्षक अनजाने में लैंगिक भूमिकाओं का समर्थन करते

हैं—STEM में लड़कों को और मानविकी में लड़कियों को प्राथमिकता देते हैं। वहीं, जोशी व भाटिया (2020) ने दर्शाया कि शिक्षकों के लैंगिक प्रशिक्षण से जागरूकता व समतामूलक व्यवहार में काफी सुधार हुआ।

**6. शोध पद्धति :**

**6.1 शोध डिजाइन:**

शिक्षकों के दृष्टिकोण का विश्लेषण करने हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया।

**6.2 न्यादर्श:**

स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श के माध्यम से 10 विद्यालयों (शहरी व ग्रामीण, सरकारी व निजी) के कुल 150 उच्च माध्यमिक शिक्षकों का चयन किया गया।

**6.3 प्रयुक्त उपकरण:**

• लैंगिक समानता पर मानकीकृत दृष्टिकोण मापनी (लिकर्ट स्केल-आधारित)

• 20 शिक्षकों के साथ अर्ध-संरचित साक्षात्कार

• कक्षा-अवलोकन सूचियाँ (चुनिंदा मामलों में)

**6.4आँकड़ों का विश्लेषण:**

मात्रात्मक आँकड़ों का विश्लेषण माध्य, मानक विचलन व टी-टेस्ट से किया गया। साक्षात्कारों के गुणात्मक आँकड़ों का विषयवार विश्लेषण किया गया।

**7. परिणाम एवं निष्कर्ष :**

**7.1 समग्र दृष्टिकोण:**

150 प्रतिभागियों में से 68% ने लैंगिक समानता के प्रति अनुकूल दृष्टिकोण दिखाया, 24% तटस्थ थे, और 8% ने पारंपरिक विचार व्यक्त किए।

**7.2 लिंग-वार तुलना:**

| शिक्षक का लिंग | माध्य स्कोर (दृष्टिकोण) | व्याख्या |
|---|---|---|
| पुरुष | 67.4 | मध्यम रूप से अनुकूल |
| महिला | 72.8 | अनुकूल |

महिला शिक्षकों के लैंगिक समानता संबंधी दृष्टिकोण में सांख्यिकीय रूप से महत्वपूर्ण अंतर ($p < 0.05$) पाया गया।

**7.3 विषय-वार दृष्टिकोण:**

विज्ञान/गणित के शिक्षकों की तुलना में मानविकी व भाषाओं के शिक्षक अधिक लैंगिक संवेदनशील दृष्टिकोण दर्शाते हैं। संभावित कारण पाठ्यचर्या के प्रकृति व कक्षा चर्चाएँ हो सकती हैं।

**7.4 कक्षा-कक्ष कार्यान्वयन:**

केवल 40% शिक्षकों ने लैंगिक समावेशी भाषा या उदाहरणों का उपयोग किया। बैठक व्यवस्था, विषय चयन प्रोत्साहन और कक्षा भागीदारी में पारंपरिक लैंगिक भूमिकाएँ दोहराई गईं ।

**7.5 गुणात्मक अंतर्दृष्टियाँ:**

- कई शिक्षकों ने लैंगिक समानता को "सभी छात्रों को समान व्यवहार" के रूप में देखा, समता (equity) की बारीकी

को नहीं समझा।

- कई पुरुष शिक्षकों में अचेतन पूर्वाग्रह दिखा—उनका मानना था कि लड़के स्वाभाविक रूप से तर्क में बेहतर होते हैं।
- शिक्षकों को समावेशी शिक्षाशास्त्र में प्रशिक्षण का अभाव था।

**8. परिचर्चा :**

निष्कर्ष बताते हैं कि मान्यता और व्यवहार के बीच अंतर है। अधिकांश शिक्षक सिद्धांत में लैंगिक समानता का समर्थन करते हैं, परंतु कक्षा की वास्तविकताएँ आंशिक या असंगत कार्यान्वयन दिखाती हैं। महिला शिक्षक और मानविकी के शिक्षक अधिक प्रगतिशील हैं, जो व्यापक सामाजिक-सांस्कृतिक प्रवृत्तियों व व्यक्तिगत अनुभवों को दर्शाता है।

अचेतन पूर्वाग्रहों की उपस्थिति, प्रशिक्षण की कमी और संस्थागत मानदंड इन दृष्टिकोणों में योगदान देते हैं। सार्वभौमिक मान्यताओं को व्यावहारिक कार्यों में बदलना ही चुनौती है,जिसके लिए निरंतर प्रशिक्षण और नीतिगत समर्थन आवश्यक है।

**9. शैक्षिक निहितार्थ :**

- सेवापूर्व व सेवाकालीन शिक्षक प्रशिक्षण में लैंगिक संवेदनशीलता व समावेशी शिक्षाशास्त्र के मॉड्यूल शामिल किए जाने चाहिए।
- पाठ्यक्रम निर्माताओं को सभी विषयों में लैंगिक रूप से संवेदनशील सामग्री को समाहित करना चाहिए।
- विद्यालय प्रमुखों को समानता और गैर-भेदभाव को महत्व देने वाली संस्थागत संस्कृति को बढ़ावा देना चाहिए।
- नियमित संवेदीकरण कार्यशालाएँ और चिंतन सत्र शिक्षकों को उनके पूर्वाग्रहों को पहचानने में सहायक होंगे।

**10. निष्कर्ष :**

अध्ययन का निष्कर्ष है कि यद्यपि उच्च माध्यमिक शिक्षक सामान्यतः लैंगिक समानता का समर्थन करते हैं, किंतु वास्तविक कक्षा-कक्ष प्रथाएँ पीछे हैं। दृष्टिकोण और कार्यों के बीच की खाई को पाटने के लिए महत्वपूर्ण प्रयासों की आवश्यकता है। शिक्षा को सामाजिक परिवर्तन का साधन बनाने हेतु शिक्षकों को लैंगिक समतामूलक शिक्षण वातावरण को बढ़ावा देने का ज्ञान, उपकरण और मानसिकता प्रदान की जानी चाहिए।

**11. सुझाव :**

1. सभी शिक्षण कर्मचारियों के लिए अनिवार्य लैंगिक संवेदीकरण कार्यक्रम आयोजित करें।
2. शिक्षकों को उनके पूर्वाग्रहों का मूल्यांकन करने हेतु चिंतनशील प्रथाओं व प्रतिपुष्टि तंत्र को शामिल करें।
3. नेतृत्व भूमिकाओं व सभी विषयक्षेत्रों में लड़के-लड़कियों की समान भागीदारी को प्रोत्साहित करें।
4. विद्यालयों में नीतियों की निगरानी व नियमित ऑडिट हेतु लैंगिक समन्वयक नियुक्त करें।
5. सभी विश्वविद्यालयों में बी.एड./एम.एड. पाठ्यक्रम में लैंगिक मॉड्यूल को समाहित करें।

**10. संदर्भ :**

1. सैडकर, डी., और ज़िटलमैन, के. (2009). Still Failing at Fairness: How Gender Bias Cheats Girls and Boys in School and What We Can Do About It. स्क्रिबनर.
2. शर्मा, पी. (2017). भारतीय कक्षाओं में लैंगिक पूर्वाग्रह एक शिक्षक का परिप्रेक्ष्य. इंडियन जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च, 6(2), 45-58.
3. यूनेस्को. (2018). ग्लोबल एजुकेशन मॉनिटरिंग रिपोर्ट जेंडर रिव्यू.

4. जोशी, एम., और भाटिया, के. (2020). शिक्षकों के दृष्टिकोण पर लैंगिक संवेदीकरण प्रशिक्षण का प्रभाव. जर्नल ऑफ एजुकेशनल डेवलपमेंट, 10(1), 35-42.
5. भारत सरकार. (2020). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020. शिक्षा मंत्रालय.
6. एनसीईआरटी. (2021). शिक्षकों के लिए लैंगिक अध्ययन. एनसीईआरटी प्रकाशन.